Lkar rqylh lkgc dh कृfr;ksa esa vk/;kfRed psruk

/keZ-foKku fo"k; esa ih-,påMhå dh

mikf/k gsrq çLrqr 'kks/k-çcU/k dh

çLrkfor :ijs[kk

2020

funsZ'kd — 'kks/kkfFkZuh

प्रो० श्रीमती अगम कुलश्रेष्ठ — आरती सतसंगी

विभागाध्यक्ष

संस्कृत विभाग, कला संकाय

laLÑr foHkkx] dyk ladk;]

n;kyckx ,tqds'kuy bULVhV~;wV ¼MhEM fo'ofo|ky;½]

n;kyckx] vkxjk& 282005

mÌ';&

प्राचीन काल से ही भारत भूमिऋषि-मुनियों और सन्तों की जननी रही है। समय-समय पर व्यास, वाल्मीकि, शुकदेव, नारद, दधीचि, गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, सूरदास, तुलसीदास आदि संत-मनीषी यहाँ अवतरित होते रहे हैं। उन्हीं ऋषियों एवं संतों की अविच्छिन्न परम्परा में एक अत्यन्त अद्‍भुत एवं गौरवमयी कड़ी के रूप में संत तुलसी साहब हैं।

इनका अवतरण पूना में उच्चवंशीय ब्राह्मण जाति के पेशवा परिवार में माना जाता है। रत्नसागर के अनुसार इनका जन्म विक्रमी संवत् 1845 (ई. 1788) में हुआ था। ये पूना राजघराने के युवराज थे, किन्तु प्रबल वैराग्य और पूर्व जन्मों के संस्कारवश उन्होंने पिता के चाहते हुए भी राजगद्‍दी को छोड़ संसार-मोह से त्याग का व्रत लिया। भारत के गौरव महात्मा बुद्ध के सदृश ही इन्होंने अपने इकलौते पुत्र और रूपवती पत्नी लक्ष्मीबाई के मोह को छोड़कर प्रभु-प्राप्ति के लिए त्याग एवं तपस्या का जीवन स्वीकार किया। अध्यात्म के मूलमंत्र एकान्त, शान्त एवं मौन का प्रयोग करने के लिए ही हाथरस के पुराने किले के खण्डहर में इन्होंने संसार से दूर रहकर प्रभुचिन्तन करते हुए आत्मसाक्षात्कार किया।

संत तुलसी साहब ने संसार में फैले हुए जातिवाद, कर्म-काण्ड, पूजा-पाठ एवं साम्प्रदायिक कट्टरता को समाप्त करने के लिए अपने मत का प्रचार किया। इन्होंने परमात्मा प्राप्ति और परमात्मा-भजन के लिए हृदय की स्वच्छता को ही महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा– þfny dk gTkjk lkQ dj tkuk dks vkus dks fy,] /;ku xSjks dk mBk mlds fcBkus dks fy,Aß

संत तुलसी साहब ने बहिर्मुख से अंतर्मुख होने का उपदेश किया। इनके प्रमुख शिष्यों में सूरस्वामी जी महाराज, गिरधारी जी महाराज एवं बाबा देवी साहब जी महाराज थे। रत्नसागर के अनुसार संत तुलसी साहब ने अपना पंचतत्त्व निर्मित शरीर विक्रमी संवत् 1905(ईसवी सन् 1848) में त्याग दिया।

इनकी तीन कृतियाँ अब तक सर्वथा प्रसिद्ध और इनके सृजन के साक्ष्य के रूप में उपलब्ध हैं। ये हैं–

1. घट रामायण

2. शब्दावली भाग 1, शब्दावली भाग 2 तथा शब्दावली भाग दो के पीछे पद्मसागर नामक अति छोटी-सी कृति है।

3. रत्नसागर

1- ?kV jkek;.k&

घटरामायण का अर्थ है कि घट में न केवल सम्पूर्ण सृष्टि का अन्तरण है अपितु सम्पूर्ण सिद्धान्तों तथा आध्यात्मिक चिन्तन की अन्तर्साधना का प्रकाशन है। संत तुलसी साहब अपने इस मन्तव्य को अनेक स्थलों पर कहते ही नहीं अपितु साधना के व्यावहारिक स्तर पर भी उतारते हैं।

यहाँ सम्पूर्ण सृष्टि इस अंड (पिण्ड) शरीर में निहित है और इस प्रकार सम्पूर्ण सृष्टि की गाथा वे अपनी अन्त"चेतना में स्वीकार करके लिखते हैं कि–

Þru eu cã.M ilkj v.M [k.M uk[kM y[kA
lk?kV y[ku e>kjdjr ly cã.M dhAAß

?kV jkek;.k i- 29

Þfi.Mekfgcã.M n[kk fut ?kj tkb dA
x# in ije çdkl fut vdkl vEcj p[khAAß

?kV jkek;.k i- 35

इसी पिण्ड शरीर में पचासी पवन हैं, इसी में षट् चक्र, द्वादश नाल हैं। इस घट में त्रिवेणी हैं, यही प्रयाग है, गंगा यमुना तथा सरस्वती हैं। इसी में सुन्न महल है, शब्द शिखर है, त्रिकुटी है। इसी घट में तीन गम्य लोक और चौथा अगम्य लोक है। सत्तलोक में जो अनाम तत्त्व है उसे विरले ही जानते हैं।

सम्पूर्ण लोक,अध्यात्म, पुराण, धर्मकथा एवं उनके विविध संदर्भों का समाहार करते हुए संत तुलसी साहब कहते हैं–

Þ?kV e Loxl ujd g nkbA ?kV e tue eju ifu gkbAA
?kV e dFkk ijku lukoA ?kV e ek;k dje djkoAA
?kV e cB ikpk uknkA ?kV e ykxh lgt lek/kkAA
?kV e jktk g cfy ckouA ?kV e lhrk j?kifr jkouA
?kV e ldno C;kl v# ukjnA ?kV e _"kh euh v# lkjnAA
tk lc ?kV dfg cju lukbA tk tx dkxn fey u L;kghAA

?kV jkek;.k i- 83]84

संत मत के अन्तर्गत अगम्य तत्त्व का उद्‌बोधन एवं उसकी प्राप्ति तथा साधनाओं द्वारा अन्तर्वृत्ति के अन्तर्गत अन्वेषण और बाह्य आडम्बर, पंथ, भेष, मूर्ति, धर्मग्रन्थ, मंदिर, तीर्थ आदि के स्थान पर इस घट की अन्तर्वृत्ति में ब्रह्मतत्त्व (अगम तत्त्व) की प्राप्ति ही घट रामायण का मूल मंतव्य है।

लखनऊ से प्रकाशित टीका 'घट रामायन' नाम से प्रकाशित है तथा वेलवेडियर प्रेस इलाहाबाद से प्रकाशित टीका 'घट रामायण' के रूप में है। रूपरेखा में दोनों टीकाओं का उपयोग किया गया है।

2 rqylh 'kCnkoyh&

सब्द या सबद निर्गुण पंथ का एक पारिभाषिक शब्द है। परम्परा में संतों एवं सद्‌गुरुओं द्वारा आध्यात्मिक अनुभव एवं साधना के संदर्भ में जिन सत्यों का साक्षात्कार हुआ है उनका कथन ही 'सबद' है। तुलसी साहब की शब्दावली का भी यही अर्थ है। ये उनके आध्यात्मिक अनुभव से सम्बन्ध विविध अनुभवों के संकलन या उनके अपने निजी अनुभव के प्रमाण हैं। ये सबद अनेक छन्दों तथा अनेक रागों में संतों की साधना से जुड़े उनके विविध पक्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

शब्दावली के मुख्य विषय निर्गुण मतवाद से सम्बद्ध हैं। विविध आडम्बरों का विरोध सर्वत्रदृष्टिगत है। विविध प्रकार के कर्मों के आडम्बर के बीच फँसे हुए मानव समाज को सहज, नैतिक एवं आडम्बर विहीन मार्गदर्शन हो, इस कृति का यही मुख्य लक्ष्य है।

शब्दावली का सबसे प्रिय विषय है– आध्यात्मिक रहस्यवाद। कबीर आदि संतों की परम्परा में तुलसी साहब भी उस अगम्य प्रियतम के लिए आत्मा की पीड़ा भरी वेदना को निरन्तर व्यक्त करते हुए केवल मिलने की कामना ही नहीं करते अपितु उसके तादात्म्य से मिले सुख को अपने विशिष्ट अनुभव के साथ व्यक्त करते हैं।

> þlrxq# fojfgu ckr dyst jkos vkj fpYykbA
> gk; gk; fg;s es fufl okl j gjne ihj fijkbAA

'kCnkoyh i- 1

3 jRulkxj&

रत्नसागर का मूल मन्तव्य मानव जाति के उद्धार से सम्बद्ध है। इस सृष्टि-रचना के बीच जीव का जन्म किन कारणों से होता है और किन कारणों से वह लोक में बँधा हुआ चौरासी लाख योनियों में

भटकता रहता है। जीवन के भटकाव का मुख्य कारण उसकी कर्म संसक्ति एवं उनसे सम्पन्न शक्तियाँ हैं।

पद्मसागर केवल 8 पृष्ठों की बहुमूल्य कृति है, जिसमें राजा कुंवरसेन का वृतांत है।

चैतन्य शक्ति वह है जिस में आदि शक्ति निहित है और प्रकृति की विभिन्न शक्तियाँ इसी शक्ति के भिन्न-भिन्न माध्यमों से संसर्ग में आने से उत्पन्न होती है।

> Þije l"Vk ;k ije iq#"k ,d vuUr psrU; L=ksr ;k Hk.Mkj gSA tSls fo|qr 'kfDr ds L=ksr gSa] ;kfU=d 'kfDr ds L=ksr gSa] ty 'kfDr ;k Åtk ds L=ksr gSa] vkfFkZd 'kfDr ds L=ksr gSa] blh rjg psrU; 'kfDr dk Hkh L=ksr gS vkSj ml psruk ds ey L=ksr dks tks fd vuUr psrU; L=ksr ;k Hk.Mkj gSa] mlS ije l"Vk ;k ije iq#"k dgrs gSA mlds xq.k ;k y{k.k gSa& ije Kku] ije ¼çse½ vkuUn o ije 'kfDr ,oa ije çdk'kA mldk dksbZ :i ugha gS u gh vkÑfrA og egk 'kfDr] vkuUn Kku vkSj çdk'k dk L=ksr gSAß
>
> ¼^ver cpu* **‘Discourses on Radhasoami Faith’** dk vuqokn i"B 175½

चेतना शब्द चित् संज्ञाने धातु से निष्पन्न होता है। अंग्रेजी भाषा में इसके लिए consciousness शब्द का प्रयोग होता है। चैतन्य, वेदन, अनुभव, अन्तः संज्ञा, बोध अन्तर्बोध, ज्ञान, चित्ताभोग, मनस्कार, अहंकार चिदात्मक, प्रमा (internal consciousness), अन्तःचैतन्य (consciousness of pleasure) सुखानुभव, सुख वेदन आदि इसके विविध अर्थ है।"

ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में चेतना की परिभाषा इस प्रकार है "The normal mental condition of the waking state of human, characterised by the experience of perceptions, thoughts, feelings, awareness of external world and often in humans .... self awareness."

Pksruk dh ck/keY;kdu ijd ifjHkk"kk bl çdkj nh tk ldrh g&

चेतना स्वयं के और अपने आस-पास के वातावरण को समझने तथा उसकी बातों का मूल्यांकन करने की शक्ति का नाम है।

psruk dh lef"Vijd ifjHkk"kk dks bl çdkj çLrqr fd;k tk ldrk g&

"कभी-कभी चेतना संकल्प, भाव और ज्ञान की समष्टि को भी कहा जाता है।"

"चेतना वह तत्त्व है जिसमें ज्ञान की, भाव की और क्रियाशीलता की अनुभूति है।"

उपर्युक्त दोनों परिभाषाओं को डा. समीर महाजन (काल चेतना, एक साहित्यिक आयाम पृ. 62-66) ने शब्दकोषों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

वैदिक तथा अवैदिक धर्म संहिताओं में सदाचार तथा आत्म-चेतना पर बल दिया गया है। वेद ज्ञान के अमूल्य भण्डार हैं तथा आत्म-साक्षात्कार करने वाले ऋषियों द्वारा अनुभूत परम चेतन तत्त्व का ज्ञान कराने वाले हैं। ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में वर्णित है (10/129) कि सृष्टि के प्रारम्भ में न सत था ना असत था न अंतरिक्ष था और न व्योम। मृत्यु का भी भय नहीं था केवल वह एक था। सर्वत्र अंधकार तथा जल था किंतु प्रकाश का अभाव था। वह एक तपस् से उत्पन्न हुआ। सृष्टि के आरम्भ में कोई एक 'अव्यक्त चेतन' था, उसी से सृष्टि के वैचित्र्य का अभिव्यक्तिकरण हुआ। उसी अव्यक्त चेतन को तपस् कहा गया है। इसी सर्वव्यापी, शक्ति से ज्ञानशक्ति, इच्छाशक्ति एवं क्रियाशक्ति अभिव्यक्त हुई।

vk/;kfRed-p:ruk&

अध्यात्म के क्षेत्र में 'आत्मबोध' ही चेतना है जिसके द्वारा ईश्वरीय उद्दीपन की अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह एक आंतरिक मार्ग है जो व्यक्ति को उसके अस्तित्व के सार की खोज में सक्षम बनाता है। आध्यात्मिक व्यवहार, जिसमें ध्यान, प्रार्थना और चिंतन शामिल है, एक व्यक्ति के आंतरिक जीवन के विकास के लिए अभिप्रेत हैं, ऐसे व्यवहार अक्सर एक वृहद सत्य से जुड़ने की अनुभूति में फलित होते हैं जिससे अन्य व्यक्तियों या मानव समुदाय के साथ जुड़े एक व्यापक रूप की उत्पत्ति होती है; प्रकृति या ब्रह्माण्ड के साथ; या दैवीय प्रभुता के साथ।आध्यात्मिकता को जीवन में अक्सर प्रेरणा अथवा दिशानिर्देश के एक स्त्रोत के रूप में अनुभव किया जाता है।

संत तुलसी साहब ने अपने साहित्य में विभिन्न चेतन लोकों, ब्रह्माण्ड और पिण्ड का वर्णन किया है। उनके काव्य में सुरत (आत्मा) या जीवात्मा रूपी प्रिया का विभिन्न चेतन लोकों में जाकर वहाँ के दुर्लभ विलास और लीला का वर्णन मिलता है। संत तुलसी साहब बताते हैं कि किस प्रकार सुरत शब्द योग द्वारा सुरत ऊपर के चैतन्य लोकों में विहार करती है और उस परम अलौकिक आनन्दपद को प्राप्त करती है– संत तुलसी साहब के काव्यों में आदि से अंत तक के समस्त द्वारों पिण्ड ब्रह्माण्ड और विभिन्न

चेतन लोकों का वर्णन है। लखनऊ से प्रकाशित घट रामायन की भूमिका में बाबा देवी साहब ने संक्षिप्त रूप में इसका अनुवाद इस प्रकार प्रस्तुत किया है:

Ø-	uke	Hkkn
1.	अनाम	यह वह स्थान है जिसके परे कोई और द्वार या स्थान नहीं है, यही परम पद है। इसका मालिक अनाम है। सुरत शब्द योग से इसपरम पद को लखा जा सकता है। Þrkd ij }kj ugh n[kkA tgk bd lkfgc uke u Hkkl lr ly og vxe fulkuhA cl lr okfg /kke vukehAß ^?kV jkek;.k* i"B l- 64
2.	अगम	इसका स्थान अनामी लोक के नीचे है इसका मालिक अगम पुरुष है। Þlrx# dh dl djg c[kkuhA ljfr nhUgh vxe fulkuhAAß ^?kV jkek;.k^ i"B l- 33
3.	अलख	यह स्थान अगम लोक से नीचे है। Þy[k-y[k vy[k ljfr vyxkuhA lrÑik lrx# lgnkuhAß ^?kV jkek;.k^ i"B l- 33
4.	सत्तलोक (नाम)	यह वह जगह है जहाँ सत का भण्डार है, जिसका नाश नहीं होता। इसको सत्तलोक कहते हैं। Þiko Hkkn cLr yf[k ikoA lk lryksd lkd ufl tkoA ljfr lCn e Hkkb v/khukA rkdj Hkkn dky ugh phUgkAAÞ ^?kV jkek;.k^ i"B 61
5.	भँवर गुफा	यह वह स्थान है जहाँ से रचना शुरु हुई और चेतन पर जड़ का लपेट चढ़ा। ÞHkoj xQk ekjx pf< n[kkA tgk fto lÙk ljr dk y[kkAAß ^?kV jkek;.k^ i"B 58
6.	महासुन्न और सुन्न	ये वे स्थान हैंजिस जगह निर्गुन निरंकार-अक्षर-कारण शुद्ध ब्रह्म है। ÞlUu-lUu lc djr c[kkukA lUu Hkkn dkb fcjy tkukAß ^?kV jkek;.k^ i"B 59
7.	त्रिकुटी	वह जगह जहाँ से तीन गुन पैदा हुए हैं। इसे ब्रह्मलोक कहते हैं और इस स्थान का मालिक ओंकार है। Þv"V doy vkdkj dk cklkA lk fut c>k dky reklkAA eu fFkj gkb ljfr BgjkoA f=dVh doy iou y vkoAß ?kV jkek;.k i"B 59
8.	सहसदल कमल	वह जगह है जहाँ पाँच तत्त्व पैदा हुए हैं और सूक्ष्म पर स्थूल का लपेटा चढ़ा हुआ है। कुल अच्छे बुरे कर्मों का फैसला होकर जीव दुनियाँ में इसी जगह से लौटाया जाता है। Þtgk fujtu cl funkukA lgl doy tkxh fof/k tkukAAß ?kV jkek;.k i"B 52
9.	षट् चक्र	यह वह स्थान है जहाँ पिंड और ब्रह्माण्ड दोनों की हद्द मिली है यह छठा चक्र इसलिए कहलाता है क्योंकि इसके नीचे पाँच चक्र और हैं।
10.	कंठ चक्र	वह जगह है जहाँ से विद्या और इल्म का प्रकाश होता है। इसकी अधिष्ठातृ सरस्वती है।
11.	हृदय चक्र	वह जगह जहाँ कि नाश शक्ति पैदा होती है। इसका मालिक महेश है।
12.	नाभि चक्र	वह जगह जहाँ से पालने की शक्ति पैदा होती है। इसका मालिक विष्णु है।
13.	इन्द्री चक्र	वह जगह जहाँ से कि रूप बनने की शक्ति पैदा होती है। इसका मालिक ब्रह्मा है।

14.	गुदा चक्र	वह स्थान जहाँ तीन गुन और पाँच तत्त्व पिण्ड ब्रह्माण्ड की रचना सिद्ध करके इकट्ठे हुए। इसकी शक्तियाँ बाहर की तरह बाँधी गईं। इसका मालिक गनेश है।

घट रामायन के प्रारम्भ में पिण्ड और ब्रह्माण्ड का भेद वर्णित है। (पृ. 1 से 14 तक) (लखनऊ प्रकाशन) घट रामायण में तत्त्व वर्णन भी बहुत विस्तार से किया गया है। छत्तीस प्रकार के नीर के भेद वर्णित हैं– जैसे– अजीत, करता, अनूप मुक्ति, पुरइनि, अंबुज, विषिया, अटला आदि।

þIkbZ uhj uke crykÅA uhj NrhIk cju IukÅAA
þfof/k fof/kuke uhj Ie>kÅA uke uhj fHkfu fHkfu njIkÅAAß
?kV jkek;u ¼y[kuÅ çdk'ku½ i- 14@10&11

इसके बाद रजलाई, केदार विलंभ आदि पिच्यासी प्रकार के पवनों के नाम हैं–

þfHkfu fHkfu uke fo/kh crykÅA iou fipkIh cju IukÅAA
fi.M e iou fipkIh ckIkA Ik fut Hkk"k Hkn [kykIkAAß

पिच्चासी पवनों के भेद के पश्चात् निसार धर, प्रथी, वृक्षसुर, दिलंभी, हिरा, निरंजन, पुलंधर, सफानल, कंदलकद आदि 16 प्रकार के गगन भेद वर्णित हैं।

þvkx Iug xxu dk y"kkA Ikyk xxu fi.M e n[kkAA
ftfu ftfu Iy-Ijfr I dhukA Ikyk xxu Hkk"k rfg nhukAAß

इसके बाद पच्चीस प्रकार की प्रकृति का वर्णन किया है।

þçÑfr iphI ;gh g Ik/kkA Ic thou dk bugh ck/kkAA
IR;-IR; e Hkk"k HkkbA bu dj Hkn dg Ie>kbAAß

?kV jkek;.k ¼y- ç-½ i- 56 pk- 42

इसके आगे नौ भेद नाड़ियों के हैं।

þ?kV Hkhrj uk ukjh Hkk"khA Ik ry Ih u n[kh vk[khAAß

इसके बाद पंचवायु और उनके निवास स्थलों का वर्णन है।

तत्त्व वर्णन के अलावा संत तुलसी साहब ने जीव के स्वरूप का तथा उसकी उत्पत्ति के कारण का भी सविस्तार वर्णन किया है। घट रामायन पृ० 74,75 पर उन्होंने बताया है कि किस प्रकार जीव की उत्पत्ति माता-पिता के रज-वीर्य के संभोग का फल है और शिशु गर्भ में उर्ध्वमुखी उल्टा होकर दुःखों को भोगता है। नरक के समान जीवन व्यतीत करता है और जठराग्नि की तपन से तप्त रहता है। वहाँ वह अत्यन्त व्याकुल होकर उस ईश्वर को आर्त्त स्वर में पुकारता है और उस जटिल बंधन से मुक्त होने की

प्रार्थना करता है। वह प्रार्थना करता है कि हे स्वामी! मुझे उबार लें। मैं रात-दिन तुम्हारी बंदगी करता रहूँगा। लेकिन जब बाहर आता है तो उस प्रतिज्ञा को भूल जाता है।

Þlquk xHkZ dh ckr fcpkjkA ekr-firk jt chtZ lqokjkAAß
ÞHk;k fcdy eq[k ujd lekukA tBj vfXu rku riu tjkukAAß
Þfulfnu cUnxh djkS rEgkjhA vc ekfga dk<ks egknq[kkjhAß

?kV jkek;.k ¼y- ç-½ i- 73

Þbruk fd;k djkj] vc xHkZ eas cfgj Hk;kA
Hkwyk flj tugkj] rqylh Hkk tx tky esaAAß

?kV jkek;.k ¼y- ç-½ i- 75

सम्पूर्ण शरीर में अनेक तत्त्व नाड़ियाँ इत्यादि है लेकिन सिर्फ सुरत ही निर्मल चेतन लोकों के स्थानों का अनुभव कर सकती है और जाकर जीते जी ही उन्हें देख सकती हैं–

Þ;s LFkku crkb;k] lk/kks lquks c[kkuA
dgS rqylh ?kV Hkhrjs] lqjfr ls igpkuAAß
Þjkek;.k ?kV lkj lqjfr 'kCn esa yf[k ijhAß

?kV jkek;.k ¼y- ç-½ i- 82

संत तुलसी साहब के काव्यों में परम शक्ति के नाद चेतना और प्रकाश चेतना दोनों रूपों का कथन है। अन्तर में आत्मा द्वारा लोकों में चढ़ाई के प्रारम्भ का वर्णन करते हुए संत तुलसी साहब कहते हैं कि दोनों आँखों के मध्य में अभ्यास के समय आत्मा जब केन्द्रित होती है तो अनेक प्रकार के प्रकाश देखती है तथा मधुर सुरों की झनकार का आनन्द प्राप्त करती है।

Þ,jh n'xu ij nedS nkfeuh] pedS pUnvfr ;kl jhA
vy[k iyd ij >yd fn[kkuh] ykxu yxh fiml;kl jhAA
L=ou lCn lqu vugn ckts Kku /ked ijdkl jhA
L;ke cnfj ;k fNVdu ykxh] QfVd Hkou Hk;ks Hkkl jh
lqj llh uy uHk dS }kjs rqylh rdr fuokjh jhAA

¼'kCnkoyh Hkkx 2 i"B 38½

शब्द की यह शक्तिशाली धार सभी रूहानी चेतन मण्डलों में जोर-जोर से गुंजायमान है। यह शब्द चेतना आन्तरिक मण्डलों में प्रकाश रूप में भी प्रकट होती है जो अभ्यासी को रूहानी यात्रा पर अग्रसर करती है।

Þxxu eaMy dh chp esa f>yfey >ydr uwjA
f>yfey >ydr uwj lqj dksbZ fcjyk ikoSAß

¼rqylh 'kCnkoyh Hkkx 1 i`- 37 daqMfy;ka 1-15½

इस परम चेतन अवस्था की प्राप्ति के लिए एक मात्र मानव शरीर ही है जिसमें आदि से अंत तक के चेतना प्राप्ति के द्वारे मौजूद हैं और जिसमें बैठकर ही सुरत (आत्मा) उस परम विलास को प्राप्त कर सकती है। उस चेतना की प्राप्ति के लिए संत तुलसी साहब ने अनेक सोपानों का वर्णन किया है जिन पर चढ़कर सुरत परम लक्ष्य अर्थात् मुक्ति प्राप्त कर सकती है और आवागमन का चक्कर छूट सकता है। इस तन के आवागमन का छुटकारा तभी है जब मनुष्य के कर्मों का भुगतान हो जाएगा। सतगुरु के आदेशानुसार चलने से ही कर्मों के चक्र से छुटकारा मिल सकता है।

सतसंग, ध्यान, भजन, अभ्यास के द्वारा चेतना बुद्धि के साथ जब आत्मा उस परम पद तक पहुँचती है तो उसी परम आनन्द और विलास में डूब जाती है।

भक्त का सतसंग और अभ्यास तभी बनेगा जब उसके हृदय में विरह और प्रेम का बीज होगा। भक्ति, विरह और प्रेम अत्यन्त आवश्यक है। अभ्यास भी तभी बन सकता है जब व्यक्ति सात्विक जीवन शैली को धारण करे। माँस-मदिरा और भोग विलास के जीवन का त्याग करे।

मुक्ति प्राप्ति के लिए न केवल वासनाओं, तृष्णाओं पर नियंत्रण आवश्यक है वरन् किसी भी जीव को मामूली चोट पहुँचाना भी निर्दयता माना गया है। उन्होंने अपने काव्य में सद्भाव और समता आदिगुणों का समर्थन किया है और जाति-पाति, कर्मकाण्ड आदि का पुरज़ोर विरोध किया है। इनके काव्य मानव कल्याण और एक आदर्श मानव समाज की कल्पना से संपृक्त है।

संत तुलसी साहब ने हर जाति, हर धर्म और हर वर्ग के कल्याण की कामना से ग्रन्थ रचना की है। सद्गुरु वक्त की आवश्यकता पर बल दिया है क्योंकि साधक की चेतना को वही जगा सकता है जिसने स्वयं उस चेतना की प्राप्ति की हो।

अपनी साधना जन्य अनुभूतियों के प्रचार-प्रसार के लिए इन्होंने हिन्दी के लोक-भाषा परक रूप को ही स्वीकार किया। अपने अंतस्थल से निःसृत अन्तरात्मा की आवाज़ में मुल्ला-मौलवी एवं पुरोहितादि

वर्ग की चेतना जागृति हेतु उनके वर्चस्व को तोड़ते हुए उसमें सामान्य वर्ग की भागीदारी स्थापित करते हुए समता, बन्धुत्ववाद एवं मानवतावाद का शंखनाद किया है।

संत तुलसी साहब मात्र उपदेश कुशल नहीं थे अपितु अन्य संतों जैसे– नानक, रैदास, पलटू, कबीर साहब जैसे संतों की भाँति इनकी कथनी और करनी में ऐक्य था। अपने आध्यात्मिक चिन्तन और अपनी प्रखर सामाजिक चेतना और साधनाजन्य अनुभूतियों से जो दार्शनिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन दर्शन उन्होंने प्रस्तुत किया वह आज राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय धरातल पर पूर्ण उपादेय है।

भूमण्डलीकरण के इस युग में विश्व कल्याण हेतु नैतिक, सामाजिक, धार्मिक दार्शनिक एवं आध्यात्मिक चेतना के बहुमूल्य सिद्धान्तों, साधनों शिक्षाओं एवं रहस्यों को अपनी दिव्य रचनाओं अथवा ग्रन्थों में संजोने वाले संत तुलसी साहब का समाज को दिव्य एवं अतुलनीय योगदान है।

çkDru dk;Z-loZs{k.k&

अनेक विद्वानों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों तथा संचार माध्यमों से अन्वेषण करने के पश्चात् मेरे संज्ञान में आया कि संत तुलसी साहब की कृतियों पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। डी.ई. आई. में PGDT (Diploma in Theology) के एक विद्यार्थी ने केवल घट रामायण में विविध चेतन लोकों पर एक प्रोजेक्ट किया है (2017-2018) जो अप्रकाशित है तथा डी.ई.आई. की ही एक प्रो. गुरुप्यारी सतसंगी ने "मूल्यों के विकास में पाँच संत कवियों के शैक्षिक विचारों की वर्तमान में उपादेयता– संत तुलसी साहब, कबीर साहब, दादू साहब पलटू साहब और नानक साहब" (2008) पर अपना प्रोजेक्ट किया है। डी.ई.आई. की प्रो. अगम कुलश्रेष्ठ ने 'संत तुलसी साहब के काव्यों में चेतना' पर एक लेख लिखा है जो उनकी पुस्तक "चेतना के त्रिविध आयाम" (2014) में प्रकाशित है।

रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसी दास जी कीकृतियों पर तो अनेक शोध कार्य हुए हैं किन्तु संत तुलसी साहब (हाथरस वाले) की कृतियों पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है।

çfof/k&

शोध प्रबन्ध लिखते समय मुख्यतः विवेचनात्मक व वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया जाएगा।

fo"k; p;u dk mÌs';

बाल्यावस्था से ही मेरी रुचि धर्म के प्रति रही है और धार्मिक बातें करना तथा धार्मिक पुस्तकें पढ़ना मुझे बहुत रूचिकर लगता है। रामायण और महाभारत के बहुत से अंश मैंने 17, 18 वर्ष की आयु में ही पढ़ लिए थे। इसके बाद जैसे-जैसे समझ बढ़ती गई मेरी रुचि संतमत में बढ़ने लगी। वैसे तो दुनिया में जितने भी मत हैं सभी सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं। मैं संत मत की अनुयायिनी हूँ। राधास्वामी मत की साधिका हूँ। अतः मैंने अपने शोध के लिए हाथरस के संत तुलसी साहब की कृतियों को चुना है।

मैं चाहती हूँ कि मेरे इस शोध कार्यसे सभी लाभान्वित हों तथा आने वाले विद्यार्थियों को जो संतमत में रुचि रखते हों, उनके लिए संत तुलसी साहब के काव्य में आध्यात्म तत्त्व आसानी से उपलब्ध हो सके।

परम पिता के चरण-कमलों में मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वे मुझे इस कार्य को करने के लिए अपनी दया व शक्ति प्रदान करें। मेरी यह भी आशा है कि विद्वज्जन मेरे इस प्रयास का अनुमोदन करते हुए मुझे इस विषय पर शोध कार्य की अनुमति प्रदान करेंगे।

:ijs[kk

lar rqylh lkgc dh कृfr;ksa esa vk/;kfRed psruk

çFke v/;k; &lar ijEijk& lar rqylh lkgc rFkk vU; ije lar

f}rh; v/;k;&lar rqylh lkgc& ,d ifjp;kRed v/;;u

(क) जीवन-परिचय एवं अध्यात्म के अंकुर

(ख) साहित्यिक-परिचय

r`rh; v/;k;&vk/;kfRed psruk dk Lo:i

(क) चेतना–अर्थ एवं परिभाषा

(ख) चेतना–आस्तिक, नास्तिक एवं धार्मिक परिप्रेक्ष्य में

(ग) चेतना का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वरूप

(घ) चेतना का आध्यात्मिक स्वरूप

prFk v/;k;&vk/;kfRed pruk& :i }; ,o pruk çkfIr d lkiku

(क) आध्यात्मिक चेतना रूप द्वय – नाद चेतना

प्रकाश चेतना

(ख) चेतना प्राप्ति के विविध सोपान

(अ) धार्मिक पक्ष– सेवा, सतसंग, सुमिरन, ध्यान, सदाचार, प्रेम, भक्ति तथा सात्विक जीवन शैली।

(ब) सामाजिक पक्ष – समता, साम्प्रदायिक-सद्भाव, जाति-पाँति खण्डन, कर्मकाण्ड का विरोध, आदर्श मानव समाज की कल्पना, सामुदायिक उत्थान आदि।

(स) दार्शनिक पक्ष – सद्गुरु का महत्त्व, नाम का महत्त्व, सुरत शब्द योग आदि।

ipe v/;k;&lr rylh lkgc d lkfgR; e fofo/k pru ykd

(क) परम चेतन लोक

(ख) ब्रह्माण्ड वर्णन

(ग) पिण्ड वर्णन

(घ) जीव-जगत एवं माया का तादात्म्य तथा काल चक्र

(ङ़) सुरत (आत्मा) का स्वरुप एवंस्थान

(च) जगत् का स्वरूप

"k"B v/;k;&lr rylh lkgc ,o vU; lrk dh vk/;kfRed pruk&rqyukRed v/;;u 'kk/k-ijd fu"d"k

¼d½ lanHkZ xzUFk lwph

Øe la-	iqLrd	ys[kd	çdk'ku	çdk'ku o"kZ
1.	उत्तरी भारत की संत परम्परा	आचार्य परशुराम चतुर्वेदी	भारती भण्डार, प्रयाग	2014
2.	हिन्दी संत साहित्य के स्रोत	डा. विनीता कुमारी	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2004
3.	निर्गुण संतकाव्य और आध्यात्मिक चेतना	अरूण रानी	अखिल भारतीय, साहित्य कला मंच मुरादाबाद	2010
4.	हिन्दी निर्गुण संतकाव्य – दर्शन और भक्ति	कृष्णा रैना	शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली	1977
5.	भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप	डा. श्री प्रकाश पाण्डेय	कला प्रकाशन, वाराणसी	2009
6.	मध्य युगीन निर्गुण चेतना	डॉ० धर्मपाल मैनी	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद	1972
7.	मानव चेतना	भूमित्र देव	अनामिका प्रकाशन, दिल्ली	1995
8.	चेतना के त्रिविध आयाम	प्रो० अगम कुलश्रेष्ठ	के. एल.पचौरी प्रकाशन, गाजियाबाद	2014
9.	भारतीय दर्शन की रूपरेखा	प्रो. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा	मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी	1993
10.	भारतीय धर्म और दर्शन	आचार्य बलदेव उपाध्याय	चौखम्बा औरियन्टालिया, वाराणसी	2000
11.	भारतीय धर्म साधना	गोपीनाथ कविराज	अनुराग प्रकाशन, वाराणसी	2012
12.	भारतीय धर्मों का परिचय	हरबंश सिंह, लालमणि जोशी	पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला	1977
13.	धर्मशास्त्र का इतिहास	म.म. पाण्डुरंग वामन काणे	उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ	1980
14.	आचार शास्त्र के मूल सिद्धान्त	प्रो. अनिरुद्ध झा और, प्रो. रामनन्दन मिश्र	मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली	1994
15.	भक्ति का विकास	मुंशीराम शर्मा	चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी	1979
16.	विज्ञानात्मा	शिवशंकर शर्मा	अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली	2010
17.	सहज साधना	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी	मध्यप्रदेश शासन साहित्य परिषद्, भोपाल	1963
18.	अमृत–बचन	परम गुरु महाराज साहब राधास्वामी के अर्थात् 'डिस्कोर्सेज़ ऑन राधास्वामी फ़ेथ' का परम गुरु हुज़ूर साहबजी महाराज द्वारा हिंदी भाषा में अनुवाद	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़ 2005	2005
19.	सारबचन (नज़्म)	परम पुरूष पूरन धनी हुज़ूर स्वामी जी महाराज,	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	1998

20.	सारबचन (नसर)	परम पुरूष पूरन धनी हुज़ूर स्वामी जी महाराज	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	2002
21.	प्रेम समाचार	परम गुरू हुज़ूर सरकार साहब	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	2006
22.	यथार्थ प्रकाष भाग 1, भाग 2	परम गुरू हुज़ूर साहबजी साहब	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	2005
23.	सतसंग के उपदेष भाग 1, 2, 3 का संकलन	राधास्वामी सतसंग सभा द्वारा	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	2007
24.	सोविनियर	राधास्वामी सतसंग सभा द्वारा	राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़, आगरा।	2008
25.	कबीर और आखो का जीवन दर्षन	डॉ बाबूलाल वत्स	हिन्दी साहित्य प्रचार समिति आगरा	2002
26.	Philosophy of Life A Reflected is the Bani of Guru Nanak and Upanisadas.	Arora, Kanta	D.K. Printworld (P) Ltd.	March, 2019
27.	Radhasoami Reality The Logic of a Modern Faith	Mark Juesgensmeyer	Printed in the United State of America by Princeton Academic Press	1996

¼[k½ dks'kxzUFk

Øe la-	iqLrd	çdk'ku	çdk'ku o"kZ
1.	नालंदा विशाल शब्द सागर	श्री नवल जी, आदीश बुक डिपो, करोलबाग, दिल्ली	2008
2.	मानविकी पारिभाषिक कोश	दर्शन खण्ड नगेन्द्र दिल्ली, राजकमल प्रकाशन	1966
3.	हिन्दी विश्व कोश	रामप्रसाद त्रिपाठी, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी	1964
4.	हिन्दू धर्म कोश	डा. राजबली पाण्डेय, उ० प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ	1988

¼x½ if=dk,a

Øe la-	iqLrd	çdk'ku	çdk'ku o"kZ
1.	शोध प्रभा (त्रैमासिक)	लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	1988
2.	साहित्य संदेश	संत साहित्य विशेषांक, साहित्य कुंज, आगरा	1958
3.	कल्याण	धर्मांक गीता प्रेस, गोरखपुर वर्ष 40 संख्या 1	
4.	कल्याण अंक 1,2,3	योगांक गीता प्रेस गोरखपुर भाग 10	1992

Websites-

1. www. mehisant.com > tulsi_sahab_ biography.

2. www. tulsisahib.blogspot.com

3. https.//hi.m.wikipedia.org>wiki>चेतना

4. https:// hi.m.wikipedia> wiki>आध्यात्मिक चेतनता।